

सूचना शाखा

सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग, 30प्र0

(राज्यपाल सूचना परिसर)

-----

राज्यपाल की अध्यक्षता में आज राजभवन में निजी विश्वविद्यालयों के साथ अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस-2025 के आयोजन को लेकर एक महत्वपूर्ण बैठक सम्पन्न हुई

-----

बैठक में प्रदेश के विभिन्न निजी विश्वविद्यालयों के कुलपति एवं अधिकारियों ने वर्चुअली भाग लिया

-----

योग भारतीय संस्कृति की अमूल्य देन है, जो केवल शारीरिक स्वास्थ्य तक सीमित नहीं बल्कि मानसिक, बौद्धिक और आत्मिक संतुलन का भी माध्यम है

-----

विश्वविद्यालय छात्र-छात्राओं के सहयोग से गाँवों में जाकर शिविर आयोजित करें, ग्रामीणों की स्वास्थ्य जांच कराएं, और यदि किसी को कोई बीमारी है, तो उन्हें उचित मार्गदर्शन दें और स्वस्थ जीवनशैली अपनाने में सहयोग करें

-----

'योग कनेक्ट' के माध्यम से उत्तर प्रदेश के प्रत्येक गाँव को इस मुहिम से जोड़ा जाए और आंगनबाड़ी केंद्रों को भी इस अभियान का हिस्सा बनाया जाए

-----

वृक्ष केवल हमारे पर्यावरण के रक्षक ही नहीं, बल्कि जीवनदायिनी ऊर्जा के स्रोत भी हैं

-----

विश्वविद्यालय साइकिल यात्रा या पदयात्रा के माध्यम से विद्यार्थियों को अपने निकटवर्ती जंगलों का भ्रमण कराएं। इससे बच्चों को जंगल के वातावरण, पेड़ों की विविधता और उनकी उपयोगिता को प्रत्यक्ष देखने व समझने का अवसर मिलेगा

-----

शैक्षिक संस्थानों का वातावरण विद्यार्थियों के बौद्धिक और नैतिक विकास में सहायक होना चाहिए

-राज्यपाल, श्रीमती आनंदीबेन पटेल

-----

लखनऊ: 07 मई, 2025

प्रदेश की राज्यपाल एवं राज्य विश्वविद्यालयों की कुलाधिपति श्रीमती आनंदीबेन पटेल की अध्यक्षता में आज राजभवन में अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस-2025 के आयोजन को लेकर एक महत्वपूर्ण बैठक सम्पन्न हुई। बैठक में प्रदेश के विभिन्न निजी विश्वविद्यालयों के कुलपति एवं अधिकारियों ने वर्चुअली भाग लिया। बैठक का उद्देश्य भारत सरकार के आयुष मंत्रालय द्वारा जारी दिशा-निर्देशों के अनुरूप योग कार्यक्रमों की योजना बनाना और उसे जनसामान्य तक पहुंचाने की रणनीति तय करना था।

इस अवसर पर राज्यपाल जी ने अपने उद्बोधन में कहा कि योग भारतीय संस्कृति की अमूल्य देन है, जो केवल शारीरिक स्वास्थ्य तक सीमित नहीं बल्कि मानसिक, बौद्धिक और आत्मिक संतुलन का भी माध्यम है। उन्होंने स्पष्ट किया कि 21 जून को मनाया जाने वाला अंतरराष्ट्रीय योग दिवस केवल एक दिवस का कार्यक्रम न बने, बल्कि इसे पूरे प्रदेश में 1 जून से 21 जून तक सतत रूप से मनाया जाना चाहिए। उन्होंने विश्वविद्यालयों को निर्देशित किया कि वे अपने निकटवर्ती क्षेत्रों में स्थित आंगनबाड़ी केंद्रों, प्राथमिक व माध्यमिक विद्यालयों, अन्य शैक्षणिक संस्थानों और महाविद्यालयों से समन्वय स्थापित करते हुए योग अभ्यास सत्र आयोजित करें।

राज्यपाल जी ने बैठक में यह निर्देश दिया कि आयुष मंत्रालय द्वारा निर्धारित 10 बिंदुओं पर सभी विश्वविद्यालय गंभीरता से कार्य करें और इन कार्यक्रमों को पूरे प्रदेश में प्रभावी ढंग से लागू करें।

योग कार्यक्रम केवल औपचारिकता न बने, बल्कि इसका वास्तविक परिणाम दिखना चाहिए। विश्वविद्यालयों को यह सुनिश्चित करना होगा कि इन कार्यक्रमों से आमजन के स्वास्थ्य में क्या सकारात्मक परिवर्तन आया, इस पर ध्यान केंद्रित किया जाए। इन गतिविधियों के प्रभाव और परिणामों का समग्र विश्लेषण कर एक पुस्तक तैयार कराई जाए, जिसमें इन प्रयासों से आए बदलावों का उल्लेख हो। इस पुस्तक का वितरण प्रदेश के अन्य विश्वविद्यालयों में भी किया जाए ताकि योग के लाभों के प्रति जनजागरूकता और अधिक बढ़ सके।

राज्यपाल जी ने यह भी कहा कि सभी विश्वविद्यालय अपने यहां अध्ययनरत छात्राओं का बीएमआई (बॉडी मास इंडेक्स) परीक्षण अवश्य कराएं। यदि किसी छात्रा में किसी प्रकार की स्वास्थ्य समस्या पाई जाती है, तो उसके उपचार हेतु उन्हें जागरूक और प्रेरित किया जाए। उन्होंने कहा कि एक बेटे को यदि हम स्वस्थ बनाते हैं, तो वह अपने परिवार की अनेक महिलाओं के स्वास्थ्य की रक्षा कर सकती है, क्योंकि वही बेटे भविष्य में मां बनकर पूरे परिवार को स्वास्थ्य के प्रति सजग बना सकती है। राज्यपाल जी ने बैठक के दौरान सभी विश्वविद्यालयों को निर्देशित किया कि वे अपने संबंधित जिलाधिकारियों से समन्वय स्थापित करें और प्राथमिक विद्यालयों के बच्चों को एकत्र कर उनका कुपोषण परीक्षण कराएं। केवल परीक्षण तक सीमित न रहें, बल्कि पूरे वर्ष उन बच्चों के पोषण और स्वास्थ्य सुधार हेतु कार्य योजना बनाएं, उनको भी योग से जोड़ें। उन्होंने यह भी कहा कि विश्वविद्यालय जिन गाँवों को गोद लिए हुए हैं, वहां विशेष रूप से यह गतिविधियां संचालित करें। विश्वविद्यालय छात्र-छात्राओं के सहयोग से गाँवों में जाकर शिविर आयोजित करें, ग्रामीणों की स्वास्थ्य जांच कराएं, और यदि किसी को कोई बीमारी है, तो उन्हें उचित मार्गदर्शन दें और स्वस्थ जीवनशैली अपनाने में सहयोग करें। उन्होंने कहा कि इस कार्य में एनसीसी और एनएसएस के विद्यार्थियों की भी सक्रिय भागीदारी सुनिश्चित की जाए। 'योग कनेक्ट' के माध्यम से उत्तर प्रदेश के प्रत्येक गाँव को इस मुहिम से जोड़ा जाए और आंगनबाड़ी केंद्रों को भी इस अभियान का हिस्सा बनाया जाए। इसके साथ ही राज्यपाल जी ने गर्भवती महिलाओं के लिए विशेष योग सत्र आयोजित करने की बात कही। उन्होंने 'गर्भ संस्कार' पर विशेष जोर देते हुए कहा कि इससे संबंधित पुस्तकों का अध्ययन करें और अपने-अपने जिलों में इससे संबंधित कार्यक्रम संचालित करें। गर्भवती महिलाओं को योग का प्रशिक्षण देना न केवल उनके स्वास्थ्य के लिए लाभकारी है, बल्कि इससे प्रसव के दौरान कई प्रकार की जटिलताओं से भी बचाव होता है। योग के माध्यम से महिलाओं को पेन-फ्री डिलीवरी में भी सहायता मिल सकती है। उन्होंने स्पष्ट निर्देश दिए कि इस दिशा में ठोस कार्यवाही की जाए।

राज्यपाल जी ने बैठक में यह भी कहा कि जिन विश्वविद्यालयों के पास रेडियो स्टेशन की सुविधा उपलब्ध है, वे इसका अधिकतम उपयोग करें। रेडियो के माध्यम से अपने क्षेत्र को अधिक से अधिक कवर करें और योग के प्रति जागरूकता फैलाएं। गांव-गांव तक संदेश पहुंचें, इसके लिए कार्यक्रमों का निरंतर प्रसारण किया जाए। उन्होंने विशेष रूप से यह भी कहा कि ग्राम्य क्षेत्रों के बुजुर्गों को योग से जोड़ना अत्यंत आवश्यक है, क्योंकि उनके जीवन में योग से सकारात्मक परिवर्तन आ सकते हैं। उन्होंने प्रेरित करते हुए कहा कि एक साथ एक स्थान पर एक समान योग अभ्यास आयोजित किया जाए, जिससे अनुशासन, एकरूपता और प्रभावशीलता सुनिश्चित हो सके। उन्होंने विश्वविद्यालयों को निर्देशित किया कि उनके यहां पढ़ने वाले सभी छात्र, शिक्षक, और छात्रों के माता-पिता सभी शत-प्रतिशत योग कार्यक्रमों में भाग लें। उन्होंने प्रकृति और पर्यावरण संरक्षण पर विशेष बल देते हुए कहा कि विद्यार्थियों को पेड़ों के महत्व को समझाना अत्यंत आवश्यक है, क्योंकि वृक्ष केवल हमारे पर्यावरण के रक्षक ही नहीं, बल्कि जीवनदायिनी ऊर्जा के स्रोत भी हैं। बच्चों को पेड़ों से जोड़ना, उनके प्रति प्रेम जगाना और वृक्षों के संरक्षण के प्रति जागरूक करना है।

राज्यपाल जी ने निर्देश दिए कि विश्वविद्यालय साइकिल यात्रा या पदयात्रा के माध्यम से विद्यार्थियों को अपने निकटवर्ती जंगलों का भ्रमण कराएं। इससे बच्चों को जंगल के वातावरण, पेड़ों की विविधता और उनकी उपयोगिता को प्रत्यक्ष देखने व समझने का अवसर मिलेगा। जब बच्चे पेड़ों को देखेंगे, छूएंगे और उनके बारे में जानकारी प्राप्त करेंगे, तभी उनके मन में प्रकृति के प्रति संवेदना और संरक्षण की भावना विकसित होगी। पेड़ चुपचाप हमारे लिए कितना त्याग करते हैं, वे निःस्वार्थ भाव से हमें छाया, फल, फूल, लकड़ी, और सबसे महत्वपूर्ण ऑक्सीजन प्रदान करते हैं। उन्होंने यह विचार प्रकट किया कि जितना त्याग और सेवा वृक्ष हमारे लिए करते हैं, उतना तो एक इंसान भी नहीं कर सकता। इसलिए यह हमारी जिम्मेदारी बनती है कि हम इन वृक्षों के संरक्षण में अपनी भूमिका निभाएं।

राज्यपाल जी ने सभी विश्वविद्यालयों को नालंदा विश्वविद्यालय का भ्रमण करने और उसके आधुनिक व सांस्कृतिक दृष्टि से समृद्ध इंफ्रास्ट्रक्चर से प्रेरणा लेकर अपने-अपने परिसर में उसी तरह की संरचनाओं के निर्माण की दिशा में कार्य करने का निर्देश दिया। उन्होंने कहा कि शैक्षिक संस्थानों का वातावरण विद्यार्थियों के बौद्धिक और नैतिक विकास में सहायक होना चाहिए।

उन्होंने बताया कि वे राज्य विश्वविद्यालयों के दीक्षांत समारोहों में छोटे बच्चों को आमंत्रित करती हैं, ताकि वे उस वातावरण से प्रेरणा लें और शिक्षा के प्रति उनकी रुचि बढ़े। जब छोटे बच्चे दीक्षांत समारोह में भाग लेते हैं तो उनके मन में यह लक्ष्य बनता है कि वे भी शिक्षा की प्रत्येक सीढ़ी पार

करते हुए एक दिन विश्वविद्यालय तक पहुंचें। राज्य विश्वविद्यालयों और उनके गोद लिए गए गांवों में विभिन्न प्रकार की प्रतियोगिताएं आयोजित की जाती हैं, और उनमें भाग लेने वाले बच्चों को उनके प्रदर्शन के आधार पर पुरस्कार देकर प्रोत्साहित किया जाता है। उन्होंने कहा कि निजी विश्वविद्यालयों को भी इसी प्रकार से ग्रामीण क्षेत्रों के बच्चों से जुड़कर उनकी प्रतिभाओं को निखारने का कार्य करना चाहिए। इससे समाज में शिक्षा के प्रति सकारात्मक संदेश जाता है। उन्होंने बच्चों के स्वास्थ्य पर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता पर बल देते हुए कहा कि जब हम बचपन से ही स्वास्थ्य को प्राथमिकता देंगे, तभी हम भविष्य में समाज को स्वस्थ नागरिक दे सकेंगे। उन्होंने सभी विश्वविद्यालयों को उपक्रमों से जुड़ने के लिए प्रेरित किया गया।

उन्होंने अयोध्या सहित प्रदेश के अन्य पवित्र कुंडों पर भी योग कार्यक्रम आयोजित करने का निर्देश दिया और कहा कि ऐसे पावन स्थलों पर योग करने से शारीरिक और आध्यात्मिक ऊर्जा की अनुभूति होती है, जो जनमानस को योग से गहराई से जोड़ने में सहायक होगी।

इस क्रम में राज्यपाल ने यह भी निर्देश दिया कि 1 जून से 21 जून 2025 तक राजभवन में प्रतिदिन प्रातःकालीन योग सत्रों का आयोजन किया जाय। योग संस्थाएं और सामाजिक संगठनों के साथ समन्वय स्थापित कर इन कार्यक्रमों को जनांदोलन का रूप दिया जाए। राज्यपाल ने सभी विश्वविद्यालयों, शिक्षण संस्थानों से अपेक्षा की कि वे इस दिशा में सक्रिय भूमिका निभाएं और अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस 2025 को एक व्यापक, प्रभावी और जन-संपृक्त आयोजन बनाएं। यह निर्णय इस उद्देश्य से लिया गया है कि योग को एक आंदोलन के रूप में समाज के प्रत्येक वर्ग तक पहुंचाया जाए।

इस अवसर पर अपर मुख्य सचिव, श्री राज्यपाल डॉ० सुधीर महादेव बोबडे, वर्चुअली माध्यम से जुड़े विभिन्न निजी विश्वविद्यालयों के कुलपति व कुलसचिव सहित राजभवन के अधिकारी/कर्मचारीगण उपस्थित रहे।

-----

संपर्क सूत्र:

डॉ० संगीता चौधरी,

सूचना अधिकारी, राजभवन

मो०: 9161668080

